



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-8-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा बेहद सेवाओं के उमंग में रहने वाले, याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा बापदादा और पूरे परिवार की ब्लैसिंग लेने वाले, सदा ब्लिसफुल लाइफ का अनुभव करने वाले, निमित्त बनी हुई सर्व टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के साथ-साथ दिन रात बेहद सेवाओं में तत्पर हो ही। भारत में तो रक्षाबंधन और जन्माष्टमी के त्योहारों पर सेवाओं की खूब धूम रहती है। ड्रामा की नूध प्रमाण मैं भी कुछ समय के लिए लण्डन में आई हुई हूँ। यहाँ भी बाबा के अनेकानेक बच्चों से मिलना होता रहता है। टीचर्स की रिट्रीट तथा रक्षाबंधन के कार्यक्रम भी चलते रहते हैं।

मीठे बाबा ने तो हम सबके लिए फरिश्तों की दुनिया बनाके रखी है, कहता है बच्चे यहाँ सेवा पूरी कर तुम मेरे पास वतन में आ जाओ। जब भी कुछ ऐसा नीचे-ऊपर देखो तो चले आओ ऊपर। यहाँ नीचे कहाँ रहेंगे क्योंकि अब धरती पर पाँव रखने का समय नहीं है और ज्ञान में आने से तो जीवन में बड़ी रॉयल्टी और रीयल्टी आ गयी है। साथ-साथ साक्षी होकर देखने की जो मीठे बाबा ने ट्रेनिंग दी है, यह भी बहुत मदद करती है। साक्षी रहने से बाबा मेरा साथी है, यह बहुत अच्छा अनुभव होता है। बहुत इज़ी राजयोग है, मेहनत नहीं है। सिर्फ कहता है आपस में साथ रहते, सेवा करते देहभान से न्यारे रहो तो बाबा के प्यारे बन जायेंगे और एक दो से भी प्यार मिलेगा। सभी आपस में ऐसे एक दो को प्यार से देखते प्यार करो, ऊंचे स्वमान में रहकर सबको सम्मान दो तो सभी के दिल से निकलेगा वाह बाबा वाह! वाह परिवार वाह! क्योंकि ज्ञान हमें योगयुक्त बनाता है, धारणा पर ध्यान खिचवाता है फिर उसमें सेवा समाई पड़ी है। सेवा में ऐसे नहीं बिजी हो जाओ, जो पुरुषार्थ में अलबेले वा सुस्त हो जाओ। सेवा भाग्य है। बाबा ने बहुत अच्छा सेवा का चांस दिया है। दुनिया के हर कोने में कैसे बाबा सेवा करा रहा है। सेवा क्या है? हे आत्मा तुम कौन हो, किसकी हो और क्या कर रही हो? बस। सहज है ना। आधाकल्प तो कुछ भी मेहनत नहीं करेंगे। सतयुग में सूर्यवंशी सुख से रहेंगे। उसके पहले अभी बाबा के बच्चे ब्राह्मण हैं इसलिए हमारी नेचर ऑर्डनरी मनुष्यों जैसी नहीं है क्योंकि दिल और दिमाग में है कि वैकुण्ठ में जाने से पहले परमधाम शान्तिधाम में जाना है।

संगमयुग पर बाबा ने जो टाइमटेबल बनाके दिया है, वो बहुत जरूरी है, इससे बहुत फायदा मिला है। एक अमृतवेला फिर नुमाशाम, जो संगठन में याद में बैठते हैं, वह भरपूर हो जाते हैं। उनके लिए खुशी जैसी खुराक नहीं, सारी लाइफ के अन्दर से बाबा ने चिंता फिकर से फारिग कर दिया है। पता ही नहीं है चिंता क्या होती है? बाबा ने हमारी ऐसी पालना की है जो हमें कोई भी कलियुगी व्यक्ति या वैभव का सहारा नहीं चाहिए। विश्वास संगमयुग की लाइफ में बहुत अच्छा साथ देता है। निश्चयबुद्धि हैं तो विजय निश्चित है, इसलिए निश्चित रहते हैं। तो नियम और मर्यादाओं पर चलने वाले, बाबा की आज्ञाओं को पालन करने वाले उनको बाबा कितना प्यार करता है। फिर दया, कृपा और क्षमा भाव से इतना भाग्य बनाने में साथ भी देता है। बोलो, ऐसा ही अनुभव होता है ना! अच्छा -

आप सबकी स्नेह भरी यादें, बहुत सुन्दर-सुन्दर राखियां वा कार्ड मिले हैं। सभी को दिल की दुआओं के साथ पदमगुणा याद स्वीकार हो। अच्छा - सभी को याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“समर्पणता द्वारा सम्पूर्णता”

1) सर्व समर्पण अर्थात् देह के भान का भी समर्पण। तो देह का भान तोड़कर, देह के अभिमान से भी सम्पूर्ण समर्पण, देह के सम्बन्ध और मन के संकल्पों से भी समर्पण तब कहेंगे सर्व समर्पणमय जीवन। जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले होंगे उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जायेगी।

2) सर्व समर्पण उसको कहा जाता है जो श्वासों श्वास स्मृति में रहे। एक भी श्वास विस्मृति का न हो। हर श्वास में स्मृति रहे और जो श्वासों श्वास स्मृति में रहेगा उसमें सहनशीलता का गुण जरूर होगा। उनके चेहरे पर निर्बलता नहीं होगी। यह जो कभी-कभी मुख से निकलता है, कैसे करें, क्या होगा, यह जो शब्द निर्बलता के हैं, वह भी नहीं निकलेगे।

3) पाण्डव सेना को सम्पूर्ण समर्पण का सर्टीफिकेट लेना है क्योंकि पाण्डवों का ही गायन है कि गल कर खत्म हो गए। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गलकर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए।

4) सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन और सम्बन्ध, समय सबमें अर्पण। अगर मन को समर्पण कर दिया तो मन को बिना श्रीमत के यूज नहीं कर सकते। तन और धन को श्रीमत प्रमाण यूज करना तो सहज है लेकिन मन सिवाय श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे – इस स्थिति को कहा जाता है समर्पण। अगर मन सम्पूर्ण समर्पण है तो तन-मन-धन-समय सम्बन्ध शीघ्र ही उस तरफ लग जाते हैं। तो मुख्य बात ही है मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प, विकल्पों को समर्पण करना।

5) सम्पूर्ण समर्पण वालों को मन में सिवाय बापदादा के गुण, कर्तव्य और सम्बन्ध के कुछ और सूझता ही नहीं। जो आपने समर्पण कर दिया वह आपकी चीज़ नहीं रही। जिसको दिया उनकी हुई, तो उनकी चीज़ को आप अपने कार्य में यूज नहीं कर सकते हो। यदि श्रीमत के साथ मनमत, देह-अभिमानपने की मत, शूद्रपने की मत यूज कर लेते हो तो कर्मातीत अवस्था वा अव्यक्त स्थिति सदा एकरस नहीं रह सकती।

6) जो सम्पूर्ण समर्पण हो जाता है उसकी वृत्ति-दृष्टि शुद्ध हो जाती है। दृष्टि और वृत्ति में रूहानियत आ जाती है अर्थात् दृष्टि वृत्ति रुहानी हो जाती है, जिस्म को नहीं देखते हैं तो

शुद्ध, पवित्र दृष्टि हो जाती है।

7) जैसे आपके यादगार शास्त्रों में बताते हैं – कि बाप ने वामन अवतार के रूप में (बहुत छोटे रूप में) जो माया बलि है, उससे तीन पैर में सभी कुछ ले लिया अर्थात् सम्पूर्ण समर्पण बना दिया। तो जो भी माया का बल है उसे त्यागना है।

8) मन्सा, वाचा और कर्मणा के लिए तीन बातें याद रखेंगे तो सम्पूर्ण समर्पण हो ही जायेंगे। 1- मन्सा के लिए देह सहित सभी सम्बन्धों को त्याग कर मामेकम् याद करो। 2- जैसे हँस हर समय मोती चुगते हैं ऐसे मुख से सदा रत्न ही निकलें, पत्थर नहीं और 3- कर्मणा के लिए याद रखो जो कर्म मैं करूँगा मुझे देख सभी करेंगे, जो करेंगे सो पायेंगे। इन मुख्य बातों को याद रखेंगे तो सम्पूर्ण समर्पण को अविनाशी बना सकेंगे।

9) मन्सा, वाचा, कर्मणा जो कुछ भी अब तक पुरुषार्थ की कमी के कारण चलता रहा, उसको बुद्धि से बिल्कुल ही भूल जाओ, जैसाकि अब नया जन्म लिया है। पुरुषार्थ में जो बातें कमजोरी की हैं वह सभी यहाँ ही छोड़कर जानी हैं। जबकि सम्पूर्ण समर्पण हो गये तो ऐसे ही सोचना कि दान दी हुई चीज़ है, उसे अगर फिर स्वीकार करेंगे तो उसका परिणाम क्या होगा!

10) सबसे बड़ा सरेन्डर होना है - संकल्पों में। कोई व्यर्थ संकल्प न आये। इन संकल्पों के कारण ही समय और शक्ति वेस्ट होती है। तो संकल्प से भी सम्पूर्ण समर्पण होना है। मन के उमंगों को अब प्रैक्टिकल में लाना है। जब अपने आप को समर्पण कर देंगे तब सम्पूर्ण बनना सहज हो जायेगा। मुश्किल को सहज बनाने का मुख्य साधन है - समर्पण करना। बाप को जो चाहिए वो कराये। हम निमित्त हैं। चलाने वाला जैसे चलावे, हमको चलना है।

11) जितना स्वयं को बाप के आगे समर्पण करते हैं उतना बाप भी बच्चों के आगे समर्पण होते हैं। फिर बाप का जो खजाना है वह स्वतः उनका बन जाता है। समर्पण करना और कराना, यही ब्राह्मणों का धंधा है। एक है स्वभाव समर्पण, दूसरा है देह अभिमान का समर्पण और तीसरा है सम्बन्धों का समर्पण। देह अर्थात् कर्मेन्द्रियों के लगाव का

समर्पण। जब यह समर्पण समारोह होगा तब सम्पूर्ण मूर्त का साक्षात्कार होगा और सम्पूर्ण सुहाग प्राप्त होगा, श्रेष्ठ भाग्य का दहेज मिलेगा।

12) संकल्पों को ब्रेक लगाने का मुख्य साधन जो भी कार्य करते हो तो करने के पहले सोचो कि यह कार्य जो करने जा रहा हूँ यह बापदादा का कार्य है? मैं निमित्त हूँ। जब कार्य समाप्त हो तो जैसे यज्ञ की समाप्ति के समय आहुति दी जाती है, इस रीति जो कर्तव्य किया और जो परिणाम निकला वह बाप को समर्पण (स्वाहा) कर दो फिर और कोई संकल्प नहीं।

13) समर्पण का विशाल रूप 1- अपना हर संकल्प समर्पण, 2- हर सेकेण्ड समर्पण अर्थात् समय समर्पण, तीसरा कर्म भी समर्पण और चौथा सम्बन्ध और सम्पत्ति जो है वह भी समर्पण। उसमें लौकिक सम्बन्ध भी आ जाता है। लेकिन यह जो आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है उसका भी समर्पण।

14) विनाशी सम्पत्ति समर्पित करना यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन जो अविनाशी सम्पत्ति सुख, शान्ति, पवित्रता, प्रेम, आनन्द की प्राप्ति जन्मसिद्ध अधिकार के नाते प्राप्त होती है, उसको भी और आत्माओं की सेवा में समर्पण कर दो। जैसे

ब्रह्मा बाप ने बच्चों की शान्ति में स्वयं की शान्ति समझी। ऐसे आप अन्य आत्माओं को शान्ति देने में अपनी शान्ति समझो। यह है ईश्वरीय सम्पत्ति को भी समर्पण करके अपनी साक्षी स्थिति में रहना। ऐसे विशाल रूप से समर्पण होने वाले सम्पूर्ण मूर्त और सफलता मूर्त बनते हैं।

15) समर्पण होना अर्थात् अपनापन बिल्कुल समा जाना। जैसे कोई चीज़ जब किसी में समा जाती है तो समान हो जाती है। ऐसे समाना अर्थात् समान हो जाना। तो अपना-पन जितना ही समायेंगे उतना ही समानतामूर्त बनेंगे। जैसे किसको कोई चीज़ दी जाती है तो अपना अधिकार और अन्य का अधिकार समाप्त हो जाता है। अगर अन्य कोई अधिकार रखे तो उसको कहेंगे कि यह तो मैंने समर्पण कर ली। जो सोच-सोच कर समर्पण होते हैं उनकी रिज़ल्ट अब भी पुरुषार्थ में वही सोच अर्थात् व्यर्थ संकल्प विघ्न रूप बनते हैं।

16) इस देह के भान को अर्पण करने से जब अपनापन मिट जाता है तो लगाव भी मिट जाता है। फिर वह सदा योगयुक्त और बन्धनमुक्त बन जाते हैं। योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बन्धन से भी मुक्त। जब देह के बन्धन से मुक्त हो गये तो सर्व बन्धन मुक्त बन ही जाते हैं।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

14-7-13

मधुबन

“बेदागी हीरा बनना है तो दिल को साफ और सच्ची रखो, कोई भी बात में दुःख महसूस न हो” (दादी जानकी)

हर समय सुबह शाम, रात्रि को सोने समय भी दिन-रात मैं आत्मा हूँ, यह स्मृति रहे तो ऑटोमेटिक बाबा की याद रहती है क्योंकि परमात्मा ने बताया है कि तुम आत्मा मेरा बच्चा हो, वारिस हो। तो यह स्मृति और अटेंशन रखने से कार्य-व्यवहार में होते हुए भी किसकी कमी-कमजोरी न देखें, न सुनें, यह परहेज चाहिए क्योंकि यज्ञ सेवा में हर एक निमित्त है, हर एक का पार्ट अपना है। मुझे धुन लगी पड़ी है, अन्दर की मेरी स्थिति में कोई कमी-कमजोरी न रहे, अडोल-अचल स्थिति बनें। जैसे बाबा को यह भान है कि यह सब मेरे बच्चे हैं, ऐसे हमको यह भान हो कि मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ तो सर्वशक्तिवान बाबा से शक्ति आती है। वो शक्ति फिर मुझे हर समय साथ देती है तब कहते हैं, इस रूप में बाबा

हमारे साथ है, कम्बाइण्ड है। जब सर्वशक्तिवान का साथ है तो जीवन यात्रा में कोई बात रोक नहीं सकती। जीवन यात्रा में मैं कभी रूकती नहीं हूँ। रूकने से, देखने से, सुनने से, सोचने से जो टाइम वेस्ट होता है ना, उसका दुःख होता है। बात का दुःख नहीं होता है, लेकिन अधिक सोचने से, फीलिंग में आने से जो टाइम वेस्ट हुआ उसका दुःख हुआ। बातें तो हमारे सामने भी आती होगी ना! पर मैं अपने को दुःखी नहीं करती हूँ। अगर मैंने दुःख महसूस किया तो मैं वही दूंगी मानो न मानो। जो मेरे अन्दर में होगा वह बाहर में जरूर एक्ट में आयेगा। चेहरे पर भी आयेगा, दुःख लिया है या दुःखी हुए तो दूसरों को दुःख ही देंगे। फिर दुःख देने और लेने वाले को भूलना ही मुश्किल हो जाता है फिर कोई और

दुःख आता है तो इसमें फिर दोनों का टाइम वेस्ट होता है – इससे बचाओ अपने को। सेवाओं में भिन्न-भिन्न सीन-सीनरियाँ सामने आयेंगी, फिर भी अगर कोई याद में रहने का सच्चा पुरुषार्थ करते हैं तो बाबा सामने आता है और साथ देता है। बातों के सोच में थोड़ा भी समय गया, तो यह जो पुरुषार्थ की लगन है, वो लगन की अग्नि न पैदा होती है, न काम करती है इसलिए साइलेंस चाहिए। साइलेंस में मज़ा तब है जब अन्तर्मुखी हैं।

जिस घड़ी जो बात सुना रहा है, उसी घड़ी उसे स्वरूप में लाने की लगन हो तो लिखने का टाइम ही नहीं होगा, मिस कुछ नहीं होगा। आप एक शब्द लिखेंगे, दूसरा मिस होगा, लिखने में बुद्धि चली गयी, यानि इतना बाबा के एक एक महावाक्यों का कदर करो, ध्यान रखो तो बाबा ने जिस समय पुरुषार्थ को तीव्र करने की जो विधियाँ सिखाई हैं वो स्वरूप में आ जायेंगी। तो मुरली में जादू है हमारी जीवन यात्रा में कदम कदम पर वाह गुरु वाह! फिर बाप भी है, शिक्षक भी है। बाबा सुबह से लेके रात तक पुरुषार्थ की एक ही बात के गहराई में लेके जाता था इसलिए वो पक्का हो जाता था।

बेदागी हीरा बनना है तो दिल साफ रखो, तो हीरो एक्टर हीरे मिसल जीवन हो जायेगी। हर एक कहे आपस में फीलिंग आये कि इसकी दिल साफ है, सच्ची है। सबको मेरे से यह फीलिंग है? दिल साफ और सच्ची है। सफेद कपड़ों में कहीं थोड़ा भी कोई दाग लगे तो वो शोभता नहीं है क्योंकि वो दिखाई पड़ता है। दिल साफ नहीं है, तो मन शान्त नहीं रह सकता, कनेक्शन नहीं जुड़ता है तो फिर मन से मनमनाभव

मध्याजीभव नहीं हो सकते हैं। मन शान्त है तो बुद्धि राइट काम कर सकती है। बुद्धि कभी कोई व्यर्थ में गई माना दिल में कोई बात लगी है, मन अशान्त हुआ है तो बुद्धि स्थिर नहीं हो सकती है, ना ही अन्तर्मुखी हो सकते हैं। पहले दिल मन ठीक हो तो बुद्धि से योग लगे। याद दिल से करना है, योग बुद्धि से लगाना है। मेरी वृत्ति से ऐसी भासना आवे जो उसकी वृत्ति भी साफ हो जावे इसको कहा जाता है संग का रंग। कोई बात याद आती है तो मदद मिलती है और कोई बात याद आती है तो नुकसान करती है, तो यह भी अक्ल चाहिए ना।

सम्पन्न बनना है तो कैसा बनना है, जब तक वो लगन नहीं है तो लगेगा समथिंग मीसिंग है। कुछ मिस है मेरे से... ऐसी चितवना चाहिए, चिंता नहीं। घड़ी-घड़ी यह ख्याल आवे क्या मिस है मेरे से... वो अभी अगर मेरा खत्म होगा तो वाह बाबा वाह! शुक्रिया बाबा आपका। इसके लिए कोई भी बात है चलायमान, डोलायमान नहीं होंगे, भगवान की मेहरबानी है। बाबा कहते बच्चे समय का कदर करो। हमारा राजयोग कर्मयोग है, सहजयोग है। कारोबार में राजयोग है। तो यह जैसे रॉयल्टी रीयल्टी में राजाई है। रीयल्टी की रॉयल्टी। कभी भी मन में चित्त में कुछ भी हुआ, पुरानी बात याद आई माना मन थोड़ा अशान्त है, बुद्धि ठीक काम नहीं करती है। टचिंग और कैचिंग पॉवर से समय अनुसार कहाँ कोई सेवा है, कोई जरूरत है वहाँ हाज़िर हो जायेंगे। तो योग है दवाई, योगदान है दुआ। मेरे लिए दवाई है योग, एक सेकेण्ड में तन भी खुश मन भी खुश। यज्ञ में धन सफल करने के लिए है, निष्फल एक कौड़ी भी न जावे।

दूसरा क्लास

“समेटना, समाना और सहन करना - यह तीनों शक्तियाँ साथ हो तब सन्तुष्ट रहेंगे - दादी जानकी

हमारे कई भाई बहनों को विस्तार में जाने की नेचर हैं, समझते हैं शॉर्ट में बात करने से समझेंगे नहीं। कोई भी बात होगी, भले छोटी बात होगी पर विस्तार में जाने की औरों को बताने की नेचर को चेंज करना है। मैं तो कोई भी बात के विस्तार में नहीं गई हूँ, बातों को सुनने की या सुनाने की अक्ल ही नहीं है इससे बहुत फायदा हुआ है। बाबा के काम की बनी

हूँ। समाने की रॉयल्टी है, समेटने की विधि है। समेटना, समाना, सहन करना यह तीनों शक्तियाँ एक दो से कनेक्शन है, उनसे फायदा यह है सन्तुष्ट रहना। विस्तार में जाने की आदत नहीं होगी, तो अचानक कोई भी बात हुई तो उसमें एवररेडी हैं। सामना कर सकते हैं। यह बात सामने आई है, सामना कैसे करें? यह ख्याल आया ना तो बातें और आयेंगी।

बातें तो जरूर आयेंगी, माया छोड़ेगी नहीं, हम भी माया को जान गये हैं। एक दिन बाबा के बने, दूसरे दिन माया शुरू हुई, यह हरेक को अनुभव होगा। अभी माया क्या है, जितना आगे बढ़ते हैं उतना माया भी महीन रूप धारण कर रही है। सूक्ष्म जो हमारे संकल्पों की क्वालिटी को घटिया क्वालिटी बनाती है, तो यह रॉयल्टी नहीं है।

हमारा पुरुषार्थ दिखावे वाला नहीं हो, दिल से पुरुषार्थ करने की टेस्ट बैठी हुई हो। इसमें जो विघ्न आवे उसमें मजबूत रहें। कभी भी इफेक्ट आने से कभी नरम कभी गरम नहीं बनें, घृणा नहीं आये। तो साफ दिल में ताकत आती है मजबूत बनती है। बाबा से जो सुख मिला है उसमें रहें और बांटे। कोई परीक्षा आती है तो फीलिंग में नहीं आओ। फीलिंग में न अपने लिये शुभ भावना, न औरों के लिये... तो पुरुषार्थ में थक करके कहेंगे टू मच हो गया। बाबा के दिनों में जितने भागंती हुए ना, उतने बाद में नहीं हुए हैं। अभी भी जो आयेंगे, वापस कोई विरला जाता है तभी तो अभी बाबा के बच्चे इतने बैठे हो। किसको वापस जाने का ख्याल आया है कभी! यहाँ आया वापस गया ऐसा 1000 में से 1 होगा। कहाँ जायेंगे? इतना तो समझ आ गई, ऐसी पालना फिर औरों को देनी है। मेरा मतलब यह है जो पालना आपको मिली है, जिससे आप मजबूत बने हो औरों को भी दो।

प्रश्न:- बाबा से शक्तियाँ लेने की प्रोसेस क्या है? फिर उन शक्तियों को दुःखी आत्माओं को देने का प्रोसेस क्या है?

उत्तर:- मैं आत्मा बाबा की सन्तान हूँ, यह सदा स्मृति है जैसे लौकिक बाप की स्मृति रहती है। मुझे तो मैं जानकी हूँ, यह भी स्मृति नहीं है। शरीर का नाम है, मेरे जान की “की” है -

मेरा बाबा। तो याद नहीं करती हूँ, लेकिन याद के आधार से चल रही हूँ। एक बारी मैंने बाबा को डायरेक्ट कहा - बाबा, आपको तो याद करने वाले अनेक हैं, मेरे को याद करने वाले तो आप एक हैं, पर आप कभी मुझे भूल न जाना। बहुत प्यार से कहा था, अभी तक बाबा वायदा निभा रहा है, मुझे भूलता नहीं है।

जो बाबा ने सिखाया है वो स्मृति में रहे तो शक्ति आती है ऑटोमेटिक, अगर समझो कमी कमजोरी है, मैं उसको यूज कर रही हूँ तो मैं चोर हूँ, फिर शक्ति कहाँ से आयेगी? जो कमजोरी के वश है और फिर भी उसको वो गलत नहीं समझते हैं, परन्तु बाबा की शक्ति से कोई गलती नहीं होती है, दिखावा नहीं होता है। तो हम आत्मा हैं, जैसा मेरा बाबा है, वैसा मैं हूँ। अगर हम लौकिक भान से मिक्सचर हैं तो यह भान नहीं आयेगा, यह सच्चा बच्चा है। माँ हमारी मर्सिफुल है, पिता हमारा पीसफुल है तो हम बच्चे भी ऐसा बनें तब तो कहेंगे उनका बच्चा है। जो बाबा ने कहा वो दिल में समाया, इतनी दिल साफ हो। मैं क्या बताऊँ? साफ दिल क्या होती है, यह बड़ों बड़ों का भी अटेन्शन नहीं है। पुरुषार्थ में दिल साफ है तो मुराद हांसिल है अर्थात् जो संकल्प करो वो हो जाता है। परन्तु दिल में कुछ और... करे कुछ और... कहेंगे मेरे दिल में नहीं है, पर यह करेंगे तो जरूर ना, तो यह ठगी करना हुआ ना। सच्ची दिल है तो बड़ी दिल है। बाबा शक्ति दे रहा है, मैं शक्ति से चल रही हूँ, इससे बहुत फायदा हुआ है। बाबा ऐसे मांगने से शक्ति नहीं देता है, प्रैक्टिकल मिली हुई शक्तियों को यूज करने से अनेक चमत्कार दिखाता है। जो हुआ सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा यह भी अच्छा मंत्र है। ऐसे कई अच्छे मंत्र हैं जिसे अपनाने से भी अच्छे मीठे सच्चे बन ही जायेंगे।

तीसरा क्लास

“सोते जागते योगी जीवन है, इस पर माया की छाया ना पड़े इसका ध्यान रखो - दादी जानकी

अन्तर्मुखता और साइलेंस दोनों की आपस में गहरी मित्रता है, जरा भी बाहरमुखता है बोलने देखने सुनने में, तो साइलेंस का अनुभव नहीं होता है। साइलेंस में अनुभव होता है कि हुक्मी हुक्म चला रहा है, करनकरावनहार करा रहा है। यज्ञ की सेवा अर्थ किसी को कोई ड्यूटी मिली है, किसी को कोई जिम्मेवारी है, वो अच्छी सम्भालता है ना। अन्दर

अटेन्शन है – मैं कौन, मेरा कौन? हर प्रकार की सेवा में साथ मिलता है, मेरे को कुछ करने का है। सारी लाइफ में देखा है, हमने कुछ नहीं किया है परन्तु स्थिति पर अटेन्शन रहा है। यह बाबा की हमारे ऊपर नज़र है या बाबा की नज़रों में मुझे रहना है, यह भावना है। दृष्टि बड़ी अच्छी

लगती है तो हमारी दृष्टि महासुखकारी हो। बाबा की दृष्टि ने महासुखकारी बनाया है फिर आपस में भी हमारी ऐसी महासुखकारी दृष्टि हो। कभी भी किसको देख अन्दर सूक्ष्म नाराज़ न रहें, चेक करना है कोई मेरे से नाराज़ न रहे और न मैं किससे नाराज़ रहूँ। राज़ी रहना राज़ी करना, यह भी सेवा है ना, सच्चाई और प्रेम से।

सतयुग में दैवी जीवन होगी परन्तु यह जो योगी जीवन है ना, उसी के आधार से वह होगी। तो अभी हमारी योगी जीवन है, ऐसी फीलिंग है सबको? सोते-जागते योगी जीवन है, यह कभी भूले नहीं। कोई हालत में माया की छाया न पड़े, इसकी सम्भाल करो। कभी भी पड़ सकती है परन्तु अटेन्शन से नहीं पड़ती है। कोई की मेरे से अच्छी बात नहीं हुई तो मुझे अच्छा नहीं लगता, क्या करूँ, समझ में नहीं आता, यह ख्याल आया मन में, मुख से भी वर्णन किया तो स्थिति क्या रही? थोड़ा भी इस तरह से स्थिति रही, तो यह क्या है? आखिर भी कोई हल या तरीका निकलेगा या ऐसे ही चलेगा क्या! इस प्रकार के ख्याल आना, इसको क्या

कहा जाये? जो दिल कहता है कि वायब्रेशन इतना पॉवरफुल हो जाये, वह नहीं होगा। यह तो होता ही है ना, ऐसे कहना भी योगी लाइफ नहीं है।

कोई नियम को पालन करते हैं तो उसे अच्छा माना जाता है। तो नियम का भी बल है, अटेन्शन का भी बल है। अपनी जीवन साधारणता में कभी नहीं लाना चाहिए। बोल-चाल, बैठना, उठना सब रॉयल हो। तो सदा अच्छा एटमॉसफियर बनाके रखना, यह भी अच्छा श्रेष्ठ कर्म करने की निशानी है। जो भी आपके कमरे में आये, कहाँ भी दो मिनट मिले, खुश हो जाए क्योंकि समय, संकल्प सफल करना किसका काम है? जिसको श्रेष्ठ स्थिति बनानी है, एक मिसाल बनना है। कोई खर्च नहीं है, कमाई है। बाबा का बनने से बहुत कमाई हुई है। हमको यहाँ ही अच्छा कर्म करना है, छोटा है, बड़ा है, बुढ़ा है, कर्म अच्छा करें.. यह अपने लिये भावना रखो। बाबा करायेगा, अच्छे संग में रहेंगे, नहीं कुछ करना आवे ना, ईश्वर का बच्चा हूँ, यह नशा रखो तो भी खुशी रहेगी।

22-05-16

“सदा मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, शरीर में प्रवेश होकर कर्म करो और न्यारे बन जाओ”

(गुल्ज़ार दादी)

मैं आत्मा हूँ इस शरीर की मालिक हूँ जब चाहूँ तब इस शरीर में प्रवेश करो इसीलिए यह अभ्यास करना है मैं आत्मा इस शरीर से न्यारी हूँ, कर्मेन्द्रियाँ अलग है और आत्मा अलग है। जैसे कर्मेन्द्रियाँ है वैसे यह जो कर्मेन्द्रियों के मालिक मैं आत्मा हूँ यह स्मृति में रखना है। मैं आत्मा इसका मालिक हूँ। शरीर मेरा है लेकिन मैं शरीर की मालिक हूँ। जब चाहूँ जैसे चाहूँ वैसे शरीर को चलाने वाली तो आत्मा और शरीर यह दो चीज़ें अलग हैं, मैं आत्मा परमधाम निवासी ज्योति स्वरूप हूँ। जब चाहूँ तब इस शरीर में प्रवेश होती हूँ। जब चाहूँ तभी इस शरीर को छोड़के परमधाम में जा सकती हूँ और जाती हूँ, यह अभ्यास हमें शरीर में रहते हुए बीच-बीच में करना है। जो शरीर में होते हुए भी शरीर के भान से अलग, शरीर के भान में नहीं रहो। शरीर के भान में रहने से

मैं कौन हूँ, वास्तव में यह भूल जायेगा इसलिए मैं आत्मा हूँ और इस शरीर में प्रवेश करती हूँ यह सिखाने के लिये बाबा हमको यह पाठ पढ़ा रहा है कि मैं आत्मा अलग हूँ, जब चाहूँ तब इस शरीर में आऊँ जब नहीं चाहूँ तो इस शरीर से अलग आत्मा रूप में रहती। तो अभी हम जो योग में बैठे हैं तो आत्मा रूप में सब शरीर के भान से अलग होके मैं आत्मा हूँ, इस स्मृति में बैठें। इससे यह प्रैक्टिस हो जायेगी कि शरीर अलग है और मैं आत्मा अलग हूँ। मैं आत्मा जब शरीर में प्रवेश होती हूँ तो उसका रूप बोलने चलने वाला बनता है। जब तक आत्मा नहीं आई शरीर में तब तक वो बोल या चल नहीं सकती है। तो अभी हम यह अभ्यास करते हैं कि मैं आत्मा शरीरधारी हूँ, शरीर धारण किया है तो शरीरधारी हूँ इसलिए शरीर द्वारा सुन भी सकती हूँ, बोल भी सकती हूँ,

चल भी सकती हूँ। आत्मा प्रवेश होने से शरीर में यह शक्ति आती है, नहीं तो इन सबसे न्यारी अलग है तो न्यारी है। शरीर में आती है तो बोलती भी है चलती भी है, यह भी अभ्यास हम लोग करते ही रहते हैं। पहले चुप रहते हैं अब फिर जब बोलने के लिये प्रवेश होते हैं तो फिर बोल सकते हैं। जितना समय बोलने चाहें, जितना समय क्योंकि यह कर्मेन्द्रियां जो हैं, यह बोलने चालने कर्म करने वाली हैं लेकिन जब शरीर का साथ लेंगी तभी बोल सकती हैं या कुछ भी कर सकती हैं। तो हम आत्मा इन कर्मेन्द्रियों के आधार पर जब प्रवेश होते हैं, आत्मा कर्मेन्द्रियों के आधार पर बोलती भी है, चलती भी है, सब कुछ करती है। बाकी आत्मा के रहने का स्थान जो है वो शान्त है। दोनों के सहयोग से ही कर्म कर सकते हैं। आत्मा प्रवेश होती है शरीर में और शरीर अलग पाँच तत्व का बनता है, तभी हम आत्मा प्रवेश हुई हैं। तो हम कौन और कैसे आती हैं शरीर में? शरीर में आने के बाद ही उनमें बोलने की, सुनने की शक्ति आती है। मुख है बोलने के लिए। कान हैं सुनने के

लिए। हर कर्मेन्द्रिय का कार्य अपना है। तो हर कार्य करते यह भूल नहीं जायें कि मैं कौन हूँ। तो जब चाहें तब प्रवेश होके बोलें, जब चाहें तब साइलेंस में रहें, यह दोनों ही अनुभव अपने-अपने होते रहते हैं।

2) आजकल के समय के अनुसार बाबा हमें इशारा देते हैं कि अभी जो समय चल रहा है इसमें हरेक आत्मा को अपनी धारणाओं के ऊपर, अपने कर्मों के ऊपर अटेन्शन ज्यादा देना है। भले चारों ओर कितना भी टेन्शन हो लेकिन हमें अपने आप पर पूरा-पूरा अटेन्शन देना है क्योंकि बाबा मुरली में हमें रोज़ कोई न कोई बात के ऊपर अटेन्शन दिलाता है। तो हरेक को अपनी धारणाओं के ऊपर इतना अटेन्शन देना है, जो थोड़े टाइम में बहुत कुछ अपना बना सकें। हमने देखा, हरेक का अपने जीवन के ऊपर अटेन्शन है और अटेन्शन देने से हरेक की अवस्था भी बहुत अच्छी बेफिक्र बनती जा रही है क्योंकि समय अभी ऐसा है जो अपने ऊपर स्वयं अटेन्शन देना है, तो अटेन्शन देने से हमेशा अपने जीवन का जो लक्ष्य है वो बहुत स्पष्ट दिखाई देगा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

1) हम सब राजयोगी हैं, तो राजयोगी का लक्ष्य या लक्षण क्या है? हम योगी का लक्ष्य है निरन्तर बाबा याद आये फिर उसके साथ लक्ष्य है हमें बाबा के समान कर्मातीत बनना है। हमें कर्मातीत बनना है तो फिर क्या लक्षण चाहिए? जो लक्षण हमारे संस्कारों में प्रैक्टिकल दिखाई दें। योगी की स्थिति सदा एकरस रहे। एकरस के लक्षण गाये हुए हैं – “निन्दा स्तुति, मान-अपमान, दुःख सुख में समान स्थिति.. इसकी गुह्यता बाबा ने कई बार समझाई है लेकिन निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, जय-पराजय सबमें समान हो। तो देखना है मैं ऐसी समान स्थिति में निरन्तर एकरस रहती हूँ? सदा मेरी एकरस स्थिति रहे, एक बैलेन्स में रहे, यह फुल अटेन्शन है क्योंकि सारे दिन में यह अनेकानेक बातें सामने आती हैं। जिसको बाबा ने कहा देहभान का वैराग्य हो तब तो एकरस स्थिति हो। दूसरा योगी के लिए गायन है कि स्थिति चाहिए अचल, अडोल माना किसी भी प्रकार से न चलायमान हो, न हलचल में आवे स्थिति। न संस्कार, न स्वभाव, किसी में भी हलचल न हो, न चलायमान हो, उसको कहेंगे अचल। योगी

माना सदा अचल अडोल। तो हम खुद को देखती हूँ मैं हर प्रकार से हर घड़ी हर स्टेज पर अचल हूँ? न मुझे कोई हलचल में लाता, न मैं किसी के कारण हलचल में आती! चाहे हलचलें हर समय आती हों, रोज़ की लिस्ट में हलचलें तो अनेक आती हैं, अगर पूरे दिन की दिनचर्या में देखें तो रोज़ के 100 पेपर आते हैं। हर मिनट हर घड़ी, हर घण्टे पर मुझे अचल स्थिति में स्थित रह एकरस रहना है! अपनी अचल स्थिति में रहकर सबका सामना करते सभी को जवाब देना है। इतना ही मैं अडोल रहती हूँ, अडोल माना बेफिक्र बादशाह, अपनी स्थिति में अडोल, बेफिक्र। अनेक बातों का फिक्र होते भी मैं बेफिक्र हूँ। क्यों? बाबा, ड्रामा.. बिन्दु सामने है। यह हमारे अडोल रहने का एकमात्र साधन है। और इन सभी से भी बड़ा है योगी का लक्षण अचल अडोल अखण्ड, अखण्ड माना जरा भी कभी खण्डित न हो। है अनेक स्वभाव-संस्कार, समय-साधन हर सेकेण्ड खण्डित करने वाले हैं। लेकिन मैं योगी अखण्ड हूँ? मैं खण्डित नहीं हूँ। मेरी स्थिति खण्डित न हो। यह सब नेचुरल

बेहद के वैरागी स्थिति का लक्षण होता, न कि मेहनत से। सिर्फ लक्ष्य है मैं हूँ बाबा की राजयोगी, बाबा की भुजायें अथवा जो भी कहो। बाबा कभी खण्डित हुआ? क्या नहीं बाबा के सामने आया! कभी हमने एक मिनट भी, सेकेण्ड भी बाबा को हलचल में देखा? खण्डित हुआ? तो क्या साकार में बाबा जब ऐसा हमारे सामने प्रत्यक्ष ऊदाहरण रहा, तो हम क्यों न रहें? कई प्रकार की बातें आती हैं, क्या करूँ यह ऐसा हो गया, वह तो कहा ना 100 प्रकार हैं, 100 नहीं, सहस्र प्रकार हैं। तो ब्रह्मा को भी सहस्र भुजायें हैं, तो सहस्र भुजायें माना ही सहस्र स्वभाव है ना। लेकिन ब्रह्मा ने तो उन्हें अपनी भुजायें बनाई ना। तो यह सब मेरी भुजायें हैं।

2- हम बाबा की फरमानबरदार, राइट हैण्ड भुजा हैं। बाबा तो इशारा करे... हर एक अपने आपसे पूछे, बात करे, सचमुच मैं बाबा का आज्ञाकारी फरमानबरदार बच्चा हूँ? कभी किसी फरमान का उल्लंघन तो नहीं करता?

3- बाबा हमारी बुद्धि को खोलने के लिए कितनी शिक्षायें देता है। पहले शुरू-शुरू में सुनते थे कि कर्म की सज़ा है। संकल्प में आया अन्दर खत्म करो लेकिन अभी बाबा कहते बच्चे संकल्प की भी सजा मिलती है। हमें भी अनुभव है कि संकल्प की भी सजा है। अगर शुद्ध संकल्प, श्रेष्ठ संकल्प की खुशी है तो प्राइज़ है। जैसे कोई अच्छी मार्क्स कोई बात में लेता है तो प्राइज़ मिलती है। श्रेष्ठ संकल्प चलाते चलो व्यर्थ को एलाउ नहीं करो तो बाबा के पास प्राइज़ जमा हो जाती है। कहेगा यह सदा खुशी के झूले में झूले। अन्दर से बाबा खुद मदद करता है। कोई बात हो भी जायेगी तो महसूस होने नहीं देगा। कोई कुछ कहेगा भी तो सुनाई नहीं पड़ेगा। अभी व्यर्थ संकल्प की सज़ा है, अन्दर से दुःख महसूस होता रहेगा, डाउट आते रहेंगे। संशय से संकल्प शुरू होते, क्यों हुआ! ड्रामा एक्यूरेट बना हुआ है। तुम अपनी करो, अपनी जीवन हीरे जैसी बनाओ। यह ऐसे क्यों करता है, इसमें नहीं जाओ। लॉ हाथ में नहीं उठाओ, बाबा बैठा है। तुमने यज्ञ में कुछ किया, बाबा रिटर्न देगा। सफल नहीं किया तो बाबा आपेही उनसे चुक्त्तू करायेगा। बाबा आपने हमें यह कर्मों की गुह्य गति समझाई, थैंक्स बाबा। मुझे विकर्म का खाता चुक्त्तू करके श्रेष्ठ कर्म का खाता जमा करना है। और क्या करते, कितना करते, इसमें दिमाग लगाना माना अपना दिमाग खराब करना। फिर दिमाग में बाबा की राइट बात नहीं बैठेगी। यह है सजा। कहेंगे ज्ञान में मेरा इन्ट्रेस्ट नहीं है – यह भी सजा। जो खुशी में नाच रहे थे वह खुशी में नाचना बन्द हो गया। उबासी, नींद आने लग पड़ेगी, मुरली पूरी हो जाए मैं भागू यहाँ से – यह है सजा।

4- यदि सिरदर्द हुआ तो जरूर समथिंग रांग है। सिर ठीक रहे। उस दर्द को सम्भाल सकते, इस दर्द को नहीं सम्भाला जा सकता। दूसरा दर्द टांग, बांह में पड़े उससे आंसू नहीं आयेंगे। सिर में दर्द हो रहा हो, योग ही न लगे, परेशान हो रहे हों तो दुःख के आंसू आयेंगे। यह परेशानी ही सजा है। यदि कुछ थोड़ा बहुत हिसाब-किताब है तो चुक्त्तू हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। खेल है। हमको पास विद ऑनर होना है, हर बात पास हो गई फिर चिंतन काहे का। बिगड़ी को बनाने वाला बैठा है तुम क्यों कहते बिगड़ गया! हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। हम प्रेरणा देने लायक बनें, साधारण कर्म न करें। अच्छे से अच्छा, अथक, स्नेह और सच्चाई से कर्म करें। अगर हम अथक हो, स्नेह और सच्चाई से कर्म करते रहेंगे तो उस कर्म की शक्ति भी व्यर्थ सोचने नहीं देगी।

5- बाबा कहते बच्चे, किसी देहधारी को याद किया तो यह बहुत बड़ी भूल है, तुम दिल से उतर जायेंगे। एक बार बाबा के ध्यान पर यह बात आ गई तो कहेगा यह नाफरमानबरदार है। दिल की बात जो और किसी को सुनाते उनसे बाबा को बांस आती है। जिसको दिल की बात बाबा को सुनानी हो वह बाबा के सामने आये। जिसको दिल की बात नहीं सुनानी है, वह बाबा के सामने क्यों आये! सच्ची दिल वाले को बाबा प्यार करता है। चलते फिरते माशूक को सामने रखो। तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से रूह को रिझाऊं। जो उनसे अच्छी तरह से बातें करना जानता है, विदेही होकर विदेही स्थिति में रहता है। सदा अपनी जीवन को अलौकिक जीवन बनाकर रखता है, ऐसी जीवन का जो लक्ष्य रखता है, बाबा उस पर खुश होता है। अच्छा। ओम् शान्ति।

सर्व को रक्षा सूत्र में बांधने वाली निमित्त हमारी अलौकिक बहनें,

आपने बहुत स्नेह भरी सुन्दर राखियाँ व्यक्तिगत रूप से मुझे भेजी हैं। आपको दिल की दुआओ के साथ रक्षाबन्धन के अलौकिक पावन पर्व की बहुत-बहुत शुभ-कामनायें।

प्यारा बापदादा, एडवांस पार्टि तथा एक्टिव विश्व कल्याण की सेवा के निमित्त दादियों वा बड़े भाईयों की ओर से आप सबको कोटि-कोटि बधाइयाँ स्वीकार हो। आप सबका अविनाशी स्नेह और दुआयें सदा मुझ आत्मा को आगे बढ़ाती रहती हैं। और भी आगे से आगे उड़ती कला में उड़ते सम्पन्नता और सम्पूर्णता की मंजिल तक पहुँचा देगी। ऐसी मंगल कामना के साथ सबको बहुत-बहुत याद।

बी.के. राजू